डॉ. दिनेश दधीचि

हुआ उजाला

अंधकार की काली चादर
धरती पर से सरकी।
हुआ उजाला जग में, कोई
बात नहीं है डर की।
चीं चीं चीं चीं चिड़िया बोली
डाली पर कीकर की।
कामकाज बस शुरू हो गया,
सब ने खटर-पटर की।

लाया है अखबार खबर सब
बाहर की भीतर की।
घंटी बजी, दूध मिलने में
देर नहीं पल भर की।
मैं सुनता रहता हूं हर
आवाज रसोईघर की।
मम्मी के जादू से यह लो
सीटी बजी कुकर की।

गरम पराठे

मम्मी, आज नाश्ते में मैं
गरम पराठे खाऊंगा।
उसके बाद गिलास दूध का
गट-गट-गट पी जाऊंगा।

रोज़ सवेरे जल्दी जल्दी
होना पड़ता है तैयार।
छह दिन तक ऐसा होता है,
तब जा कर आता रविवार ।

छुट्टी के दिन तो मत रोको
हँसने और हँसाने से।
सफल आज की छुट्टी होगी
गरम पराठे खाने से।

 ISSN:2583-8849